4-7-67 ओम शान्तिः रात्री क्लास

पहले-2 तो बाबा कहते है कि आत्मअभिमानी होकर बैठो। आत्म अभिमानी को आस्तिक कहा जाता है। देह अभिमानी है सभी भक्ति मार्ग वाले। देहीअभिमनी है ज्ञान वाले। तुम आस्तिक भी हो तो त्रिनेत्री त्रिकाल दृशी भी हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र सिवाय बाप के और कोई दे नही सकते है। वो है ज्ञान का सागर है। वो ही आकर रहता बताते है। त्रिनी, त्रिकालदृशी फिर कहते है त्रिलोकीनाथ। अब त्रिलोकी नाथ तो कोई भी होता नही है। सूक्ष्म वतन का नाथ होता नही है। नाथ हो तो नाथिनी भी हो। बच्चे जानते है कि ब्रहमा और विष्णु तो है यहाँ के। बाकी यह है शंकर। उनका तो कोई पार्ट ही नही है। यह भक्ति मार्ग वालो ने चित्र बना रखे है। बाकी सच्चे-2 चित्र कौनसे है? हां-ही शिव का चित्र ठीक है। विष्णु और ब्रहमा भी स्थूल लोक मे आ जाते है। शंकर की तो कोई बात ही नही। ब्रहमा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रहमा फिर बडी-2 कहानी हो जाती है। पार्वती को कोई कथा सुनाई ही नही है। कथा सुनाई है तो शिव बाबा ने ही सुनाई है। शंकर को अमर नही कहेंगे। अमर है शिव बाबा। तो यह सब भक्ति मार्ग के गपोडे है। भक्ति मार्ग है दुर्गति मार्ग ज्ञान मार्ग का तो उनको पता ही नही है। गाते भी है कि सदगति दाता परमपिता परमात्मा ही है। तो गुरु भी तो और किसीको कह नहीसकते है नां। उनको साधना करने वाले साधु कहा जाता है। भक्ति मार्ग के गुरु है। तुम्हारातो अब भटकना बन्द हो गयाहै। तुम बहुत सुखाली कमाई कर रहे हो। और कोई कमाईनेही करवाते है। वो शास्त्र आदि तो सभी है भक्ति मार्ग के। दण्ड कषाय पड़ते रहते है। तुम अभी समझू बने हो। ज्ञान की धारना भी नम्बरवार होती है। महारथी घोडे स्वार, प्यादे यह पढाई के लिये कहा जाता है। राजधानी स्थापन होती है। भक्ति मार्ग मे है ही दुःख। भक्ति मार्ग वालो को तो कहेंगे ही रोलूं। धक्के खाते है। तुम पक्के से कच्चे गये। वो है नास्तिक। तुम बाप को जानते हो। उठते बैठते चलते बाप को याद करते रहो। भक्ति मार्ग मे तो कितनी तकलीफे है। गिरते ही जाते है। भक्ति भी पहले तो अव्यभचारी थी अब तो व्यभचारी बन गई है। मनुष्य और अन्धेरे मे धक्के खाते रहते है। ज्ञान से सोजरा मिलता है। बाप कहते है तुम नम्बरवार परमभाग्यशाली हो। ओम 5-7-67:-:-रात्री क्लास:-:-ऐसी-2 लोडियां भी बहुत निकलेगी। भीष्म ब्रहमचारी कहते है। पवित्र तो बहुत ही रहते है। विलायतमे भी बहुत होते है जो पवित्र ही रहते है। अब तो दुनियां को ही बदली होना है। ऐस रूप और बसन्त कहे जाते है। बाप भी रूप-बसन्त है। रूप किधी है और बसन्त कितना है। अबतुम बच्चे जानते हो कि इस दुनियां के मनुष्य कैसे खलास हो जावेंगे। तुम साईलेन्स से विश्व पर जीत पाते हो। वो साईंस से विश्व को खलास करते है। दो बिल्ले लडते है और मक्खन बन्दर ही खा जाता है। यह भी यहां पर लगता है। वो आपस मे लडते है और मक्खन तुमको मिल जाता है। यह पढाई कितनी सिम्पल है। बाप भी गुप्त है। तो पढाई भी गुप्त है। किसीको कहो कि भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग है तो बिगड जावेंगे। तुम बच्चो को तो गाली भी खाने मे प्रवाह नही है। बाप को कितनी गालियां देते है। बाप कहते है यह भी मेरा पार्ट है। सद्गति के लिये मुझको बुलाते है। फिर मै साधारन तन मे प्रवेश करता हूं। ब्रहमा दवारा स्थापना करता हूं। यह है गाड फादरली यूनिवरसिटी। गाड फादर भी हुआ तो यूनिवरसिटी भी हुई तो पतित पावन सदगती दाता भी हुआ। यह बाते किसी भी शास्त्रो मे नही है। शास्त्रोमे तो है आटे मे लूनन। बाप कहते है कि मुझे ज्ञान का सागर कहते है। बाप सत है चेतन है नालेज फुल है तो जरूर नालेज ही देंगे। तुम कल्प सारी दुनियां की रचता और रचना की आद मध्य अन्त को जानते हो। अब बाकी थोडा समय है। तुम साक्षी होकर देखते भी हो तो पार्ट भी बजाते हो। थोडी भी अब लडाई लगती है तो समझते है कि कही पर बम्बार नही लग जावे। तैयारी तो करते रहते है नां। पुरानी दुनियां कितनी बडी है। नई दुनियां मे तो बहुत थोडे है। अब कितने सारे मनुष्य है। कितनी भाषाये है। वहां एक ही भाषा होगी। ओम